समाचार

राष्ट्रवाद के विरोध में मेनोनाइट आवाज

ज्यूरिख विश्वविद्यालय में नीतिशास्त्र के प्राध्यापक पियरे ब्यूहलर। फोटो: चार्ल्स-एन्ड्रे ब्रागलि

विज्ञप्ति जारी करने की तिथि: 9 जनवरी 2018 मंगलवार

''संसार के अनेक भागों में राष्ट्रवाद बढ़ रहा है,'' यह बात ज्यूर्ग ब्रेयकर, जनरल सेक्रटरी, कोन्फ्रेंस डेर मेनोनाइटेन डेर स्वेज/कॉंफ्रेंस मेनोनाइट सुएसे (द स्विज़ मेनोनाइट चर्च) ने कहा। वे आगे कहते हैं, ''कलीसिया और राज्य के बीच के रिश्ते के विषय में अपनी विशिष्ठ विचारधारा के कारण मेनोनाइट लोगों को राष्ट्रवाद के खतरों की ओर संकेत करने के लिए अपने आप को बेहतर रीति से तैयार करना चाहिए।''

स्विज़ मेनोनाइट चर्च ने 18 नवम्बर 2017 को एक सार्वजनिक फोरम का आयोजन किया ताकि प्रतिभागियों को आने वाले समय में किए जाने वाले विधान में परिवर्तन से सम्बन्धित जटिल मुद्दों की समझ हासिल करने के लिए तैयार करे। स्विज़ संविधान में किए गए मानवाधिकार की यूरोपीय घोषणा के एक बाध्यकारी हवाला को निरस्त करने का एक प्रस्ताव आया है। विपक्ष इस बात से चिन्तित है कि यह परिवर्तन मानवाधिकारों के प्रति प्रतिबद्धता को कमजोर कर सकता है।

इस कार्यक्रम का आयोजन ऐनाबैपटिस्ट फोरम फॉर पीस एण्ड जस्टिस के द्वारा किया गया, यह स्विज़ मेनोनाइट कॉंफ्रेंस का एक कार्यकारी दल है। आयोजकों के द्वारा स्विट्ज़रलैण्ड की मेनोनाइट कलीसियाओं, रिफार्म्ड और रोमन कैथोलिक कलीसिया जैसी विभिन्न कलीसियाओं और राष्ट्रवाद के विरोध में संघर्ष करने वाले राजनैतिक आंदोलनों से वक्ताओं को आमंत्रित किया गया। छह वक्ताओं ने मानवाधिकार के ऐतिहासिक, नैतिक, धर्मवैज्ञानिक, और राजनैतिक पहलुओं पर प्रकाश डाला।

ब्रेयकर कहते हैं, वक्ताओं ने ''मसीही विश्वास और मानवधिकार के बीच के रिश्ते का सारी मानवता की नैतिक प्रवृत्ति के एक सामान्य आधार के रूप में'' अवलोकन किया।

लगभग 50 लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया; आधे प्रतिभागी मेनोनाइट कलीसियाओं से थे, और शेष अन्य प्रासंगिक मसीही या राजनैतिक संगठनों से।

धर्मज्ञानी और मध्यस्थ डोरोथिया लोसलि ने कहा कि मानवाधिकार प्रक्रिया के विकास में मेनोनाइट लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। धार्मिक स्वतंत्रता के बचाव की उनकी जड़ें रिचर्ड ओवरटन के द्वारा 1647 में मानवाधिकार पर लिखे गए एक लेख में पाई जाती हैं, रिचर्ड ओवरटर का सम्बन्ध नीदरलैण्ड्स के वाटरलैण्डर मेनोनाइट्स के साथ था।

ज्यूरिख विश्वविद्यालय में नीतिशास्त्र के प्राध्यापक पियरे ब्यूहलर ने कहा कि अधिकारों का नैतिक महत्व यह है कि उन्हें चुना या परिभाषित नहीं किया जाता, बल्कि वे स्वाभाविक हैं। मसीही धर्मविज्ञान इन अधिकारों को मानव को सृजे गए प्राणी मान कर व्यक्त करता है, जो परमेश्वर के द्वारा ठहराए गए हैं; इसलिए एक विशेष समूह के द्वारा परिभाषित की गई कोई विधारधारा इन अधिकारों को पूर्ण अर्थों में अपने में समा नहीं सकती।

राष्ट्रवाद का विरोध करने वाले स्विट्ज़रलैण्ड के मसीहियों की यह चिन्ता है कि यह राष्ट्रवाद एक परम लोकातीत परमेश्वर को नहीं मानता जो राजनैतिक, वैधानिक, और सामाजिक आयामों में जीवन का आधार है, और इसलिए यह मानव की सीमाओं तक राष्ट्रवाद को सीमित कर देता है।

– मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस विज्ञप्ति